मुक्ति मिले सर्व बन्धनों से कोई युक्ति ऐसी निकालो
जोड़ो बाबा से रिश्ते सारे खुद को बन्धनमुक्त बनालो
सुनने वाला बनना छोड़ो अब बनो धारणा स्वरूप
मिट जायेगी तुम्हारे जीवन से दुःख संकट की धुप
सबसे प्यारा है बाप और बच्चों के मिलन का मेला
साथी सदा साथ है तो समझो ना खुद को अकेला
देख रहे हैं बाबा बच्चों ने क्या क्या किया है धारण
माया प्रूफ बनकर रहने का क्या सोचा है निवारण
आदि मध्य अंत जानकर करो अपना हर एक कर्म
त्रिकालदर्शी होकर रहने से कर्म बन जायेंगे

सुकर्म
आत्म स्मृति अपनाकर देह के बन्धन से मुक्ति पाओ
बाबा को दिल में बसाकर पुरे नष्टोमोहा बन जाओ
एक सेकंड में देह से न्यारे बनने का करो अभ्यास
देहि अभिमानी बनने के लिए करो वाणी का उपवास
देह के किसी बन्धन में फंसकर तुम माया से ना हारो
ज्ञान के तीक्ष्ण बाणों से अपने हर अवगुण को मारो
अशरीरीपन के अभ्यास से पक्का पहला पाठ करो
माया करे कोई भी वार तुम बिलकुल भी नहीं डरो
जीवन के अंतिम क्षण तक माया करती रहेगी वार

अपने पास सदा रखना श्रीमत रूपी ज्ञान तलवार
खुद की जांच करो कि मैं कितना बना हूँ बन्धनमुक्त
निर्बन्धन उतना ही बनोगे जितना होंगे तुम योगयुक्त
बाबा को दिल में बिठाकर मन की चंचलता मिटाओ
अपने मन बुद्धि से सारे भौतिक आकर्षण हटाओ
नम्र करो व्यवहार अपना वाणी में मधुरता लाओ
इन धारणाओं से तुम वरदानी महादानी बन जाओ
भक्त समान नहीं करो बाबा की महिमा या गुणगान
कर्म करो ऐसे जो भक्त करे द्वापर में तुम्हारा गुणगान
व्यर्थ खजाने गंवाने के संस्कार को करो

सम्पूर्ण नष्ट
सम्पूर्ण पवित्रता की मंजिल सदा नजरों में रखो
स्पष्ट
ॐ शांति